



असर और सुरक्षा पर अक्सर पूछे जाने वाले सवाल



1

भारतीय नियामकों ने फेज़-3 ट्रायल के आंकड़े आने से पहले ही कोवैक्सीन को मंजूरी दे दी। हम लोगों को इसे कैसे समझाएं?

हम कोविड-19 महामारी के दौर से गुज़र रहे हैं। कोविड-19 की वजह से सामाजिक बाधाओं, आर्थिक मंदी और बड़ी तादाद में लोगों की जान गई है। इस महामारी पर काबू पाने के लिए, समाज और सिस्टम दोनों को ऐसे कदम उठाने पड़ सकते हैं जिन्हें कठोर भी कहा जा सकता है। नियामकों ने कोवैक्सीन का प्री-क्लिनिकल और क्लिनिकल डेटा दोनों (फेज़ I और फेज़ II का पूरा डेटा) और फेज़ III के आंशिक डेटा को बखूबी जांचा-परखा है। यह आंकड़ा दिखाता है कि वैक्सीन पूरी तरह सुरक्षित है और शरीर में कोरोना से लड़ने के लिए एंटीबॉडीज़ तैयार करती है। हालांकि, अभी पूरी तरह ये नहीं पता है कि वैक्सीन किस हद तक लाभार्थियों को बीमारी से बचाएगी। इसलिए, नियामकों ने ट्रायल (परीक्षण) मोड में वैक्सीन के इस्तेमाल की इजाज़त दी है।

2

वैक्सीन लगवाने वालों के लिए ट्रायल मोड का क्या मतलब है?

जिस तरह हम क्लिनिकल ट्रायल फेज़ में करते हैं: सबसे पहले, वैक्सीन लगवाने वाले से एक लिखित सहमति देने को कहा जाता है। इसके अलावा वैक्सीन से कोई साइड इफेक्ट तो नहीं हुआ ये जानने के लिए लाभार्थी पर नज़र रखी जाती है। संक्षिप्त में, यह फेज़-3 ट्रायल का विस्तार होगा। लेकिन इसमें, उस व्यक्ति को ये पता होगा कि उसने वैक्सीन लगवाई है, न कि प्लेसिबो। यह पूरी तरह से स्वैच्छिक है।



3

वैक्सीन बनाने में कई साल लग जाते हैं। लेकिन, इस बार हमारे वैज्ञानिकों ने कोरोना वायरस के खिलाफ इतने कम समय में वैक्सीन तैयार कर दी। ये कैसे संभव हुआ?

आमतौर पर वैक्सीन बनाने में वर्षों का शोध शामिल होता है। सबसे पहले, हमें एक वैक्सीन कैंडिडेट की ज़रूरत होती है। जानवरों में इसकी सुरक्षा और असर का मूल्यांकन किया जाता है। प्री-क्लिनिकल ट्रायल से गुज़रने के बाद वैक्सीन कैंडिडेट क्लिनिकल ट्रायल फेज़ में जाता है। जहाँ वैज्ञानिकों ने दिन रात प्रयोगशालाओं में काम किया है, वहीं नियामकों की मंजूरी भी तेज़ी से मिलती गई, जिसमें आम तौर पर महीनों लगते हैं। इससे प्री-क्लिनिकल और क्लिनिकल ट्रायल स्टेज के बीच जो समय बरबाद होता था, उसे बचाने में मदद मिली। पहले, वैक्सीन बनाने में कई सारे चरणों से गुज़रना होता था, लेकिन कोरोना वायरस की वैक्सीन के मामले में वैज्ञानिकों और नियामकों ने कदम से कदम मिलाकर काम किया और किसी प्रोटोकॉल और किसी कदम पर समझौता किए बिना पूरी प्रक्रिया को रफ़्तार दे दी।





4

देश में इस्तेमाल हो रही दोनों वैक्सीन कितनी सुरक्षित और कितनी असरदार है?

वैक्सीन सुरक्षित है, यह सुनिश्चित करने के लिए बड़ी संख्या में लोगों पर इसे परखने की जरूरत होती है। वैक्सीन विकसित करने वाले वैज्ञानिकों ने क्लिनिकल ट्रायल के किसी भी चरण में सैंपल साइज़ को घटाया नहीं, बल्कि आमतौर पर एक वैक्सीन के परीक्षण में हम जितना सैंपल साइज़ लेते हैं उससे बड़ा ही था।

जब वैक्सीन का परीक्षण किया जाता है तब उसके ज्यादातर प्रतिकूल या अवांछित असर, अगर होता है, तो वो वैक्सीन लगने के पहले चार-छह हफ्तों में ही दिख जाता है। इसलिए, यह सुनिश्चित करने के लिए कि वैक्सीन सुरक्षित है, हम पहले दो-तीन महीने उन लोगों पर पैनी नज़र रखते हैं जिन्हें वैक्सीन दी गई है। यह आंकड़ा हमें यह तय करने में मदद करता है कि वैक्सीन सुरक्षित है या नहीं।

वैक्सीन तैयार करने, परीक्षण और मूल्यांकन में इन प्रक्रियाओं का बखूबी पालन किया है। इस मापदंड पर दोनों भारतीय वैक्सीन सुरक्षित माने जा रहे हैं। जहां तक वैक्सीन के असर की बात है तो हमें यह बताने के लिए समय चाहिए कि वैक्सीन कितनी कारगर है। सभी वैश्विक एजेंसियों ने बेंचमार्क निर्धारित किया है कि सिर्फ उन्हीं वैक्सीन कैंडिडेट पर विचार होगा जो कम से कम 50-60% असर दिखाते हों। अधिकांश वैक्सीन ने दो या तीन महीने के छोटे समय के ऑब्ज़र्वेशन में 70-90% असर दिखाया है। इसके अलावा जब एक वैक्सीन को आपात इस्तेमाल की मंजूरी/प्रतिबंधित इस्तेमाल की मंजूरी दी जाती है, जैसा कि कोविड-19 वैक्सीन के केस में हुआ, तब ये जानने के लिए ट्रायल फॉलोअप एक-दो साल तक जारी रहता है कि वैक्सीन कितने लंबे वक्त तक सुरक्षा देगी।

5

क्या वैक्सीन लगाने के बाद मुझे मास्क लगाने/दूसरे कोविड-19 अनुकूल एहतियात बरतने की जरूरत होगी?

हां, यह बिल्कुल जरूरी है कि हर कोई जिससे कोविड-19 वैक्सीन लग चुकी है, वो कोविड-19 अनुकूल व्यवहार का कड़ाई से पालन करें। यानी कि खुद को और अपने आस-पास के लोगों को फैलते संक्रमण से बचाने के लिए मास्क लगाना, दो गज की दूरी और समय-समय हाथ को सैनिटाइज़ करना।



6

वैक्सीनेशन के बाद मैं कितने समय तक सुरक्षित रहूंगा?

वैक्सीन लगने के बाद शरीर में प्रतिरोधक क्षमता कितने लंबे समय तक बनी रहेगी ये तय होना अभी बाकी है। इसलिए, मास्क का इस्तेमाल, दो गज की दूरी, समय-समय पर हैंड सैनिटाइज़ेशन और दूसरे कोविड-19 अनुकूल व्यवहार पर दृढ़ता से अमल की सलाह दी जाती है।



7

क्या वैक्सीनेशन नए स्ट्रेन/SARS-CoV2 के म्यूटेड वायरस से बचाता है?

वैक्सीनेशन के बाद प्रतिक्रिया में हमारा शरीर स्पाइक प्रोटीन समेत वायरस के दूसरे हिस्सों के लिए एक से अधिक तरह की एंटीबॉडीज़ बनाता है। इसलिए, ऐसी उम्मीद की जा रही है कि सभी वैक्सीन काफी हद तक म्यूटेड स्ट्रेन (वायरस का बदला रूप) के खिलाफ सुरक्षा देंगे। उपलब्ध आंकड़ों के आधार पर ऐसा रिपोर्ट किया जा रहा है कि म्यूटेड वायरस को बेअसर करने में सक्षम नहीं है।



8

कौन-सी वैक्सीन बेहतर है, कोविशील्ड या कोवैक्सीन?

भारत में इस्तेमाल हो रही दोनों वैक्सीन के बीच सीधे-सीधे कोई तुलना नहीं है, इसलिए कोई एक के ऊपर दूसरे को नहीं चुन सकता है। संक्रमण रोकने में दोनों ही अच्छा काम करेंगे, साथ ही साथ किसी इंसान को बीमारी की गंभीर स्थिति में जाने से बचाएंगे भी। लंबे समय के प्रभाव में यह बुजुर्ग लोगों या कोमोर्बिडिटीज़ (एक से अधिक गंभीर बीमारी) वालों को मौत से बचाएगा।



9

वैक्सीनेशन के कितने दिन बाद एक पर्याप्त प्रतिरोधक क्षमता और सुरक्षा बनेगी?

पर्याप्त प्रतिरोधक क्षमता बनने में वैक्सीनेशन शेड्यूल के पूरा होने यानी कोविशील्ड और कोवैक्सीन की दूसरी डोज़ के बाद 2-3 हफ्ते लगते हैं।



10

क्या इस वैक्सीन से हर्ड इम्यूनिटी मिलती है?

जब समुदाय में वैक्सीन लगने वालों की संख्या बढ़ती है तो हर्ड इम्यूनिटी के ज़रिए एक परोक्ष सुरक्षा मिलती है। हर्ड इम्यूनिटी हासिल करने के लिए जितने लोगों के इम्यून होने की जरूरत होती है उनका प्रतिशत अलग-अलग बीमारियों के अनुसार घटता-बढ़ता रहता है। उदाहरण के लिए, खसरा के लिए 95%, हालांकि ये अभी पता नहीं चला है कि कोरोना के खिलाफ हर्ड इम्यूनिटी हासिल करने के लिए कितने प्रतिशत लोगों का प्रतिरक्षित होना जरूरी है।

